विचार बिन्दु

किताबों में वजन होता है! ये यूँ ही किसी के जीवन की दशा और दिशा नहीं बदल देतीं। –इला प्रसाद

समान स्कूल व्यवस्था क्यों नहीं?

भारतीय संविधान में बिना किसी भेदभाव के सबको अवसर की समानता प्रदान करने की बात की गई है। इसका अर्थ यह हुआ कि भारतीय संविधान सबके लिए शिक्षा का समान अवसर सुनिश्चित करता है। 86वें संविधान संशोधन के माध्यम से 6 से 14 वर्ष के बच्चों को अनिवार्य और मुफ्त शिक्षा का अधिकार शिक्षा का मौलिक अधिकार दिया गया है। शिक्षा का अधिकार कानून भी वर्ष 2009 में भारत सरकार द्वारा पारित किया गया। इन सबके बावजूद यह एक सर्व विदित सत्य है कि शिक्षा की कई प्रकार की व्यवस्थाएं वर्तमान में देश में संचालित हैं, जिनमें जमीन-आसमान का अन्तर है। एक ओर जहां लाखों स्कूल सरकारी स्कूल ऐसे हैं जहां छोटी कक्षा के बच्चों को बैठने के लिए डेस्क तो दूर, दरी पट्टी तक उपलब्ध नहीं है। दूरस्थ राजकीय विद्यालयों में 100 विद्यार्थियों पर एक ही शिक्षक है। हजारों विद्यालय ऐसे हैं जहां पर एक भी शिक्षक उपलब्ध नहीं है। किसी भी प्रकार के मूलभूत सुविधाओं की बात तो करना ही बेमानी है। दूसरी ओर ऐसे महंगे निजी विद्यालय हैं जहां पर सारी सुख सुविधा उपलब्ध हैं। वातानुकूलित कक्षा कक्ष हैं, सभी प्रकार से सुसज्जित प्रयोगशालाएं हैं और सभी प्रकार की गैर शैक्षणिक गतिविधियों के लिए भी पूर्ण सुविधाएं हैं ।

इस प्रकार की दोहरी शिक्षा व्यवस्थाओं के रहते हुए, क्या हम यह दावा कर सकते हैं कि भारत के सभी नागरिकों को संविधान के अंतर्गत शिक्षा का समान अधिकार प्राप्त हो गया है ? यह भी स्पष्ट है कि जब तक शिक्षा का समान अवसर सबको प्राप्त नहीं होगा तब तक वंचित वर्ग के प्रतिभाशाली विद्यार्थी भी अपनी क्षमता का प्रयोग स्वयं के लिए एवं देश के लिए करने में सक्षम नहीं हो पाएंगे । सरकारी विद्यालयों की प्रारंभिक शिक्षा का हाल, बेहाल होने का ही परिणाम है कि आजकल गरीब परिवार भी अपने बच्चों को निजी विद्यालयों में भेजने के लिए बाध्य होने लगे हैं। ऐसे निजी विद्यालय कुकुरमुत्ता की तरह पूरे समाज में आए हैं। शिक्षा ने अब धीरे-धीरे पूरी तरह व्यवसाय का रूप ले लिया ले लिया है । किसी न किसी बहाने, सरकार अपनी ओर से अच्छी गुणवत्ता की शिक्षा सब बच्चों को उपलब्ध कराने के बजाय, अब निजी क्षेत्र को निजी क्षेत्र को सौंपने लगी है। इसका परिणाम यह हुआ है कि निर्धन परिवारों एवं साधारण परिवारों के बच्चों को की गुणवत्ता हीन शिक्षा प्राप्त हो रही है।

शिक्षा की गुणवत्ता कितनी खराब है और खराब होती गई है, यह असर से स्पष्ट होता है जो कि 'प्रथम' शैक्षिक संगठन द्वारा प्रतिवर्ष पूरे देश में सर्वेक्षण के आधार पर जारी किया जाता है। हालात यहां तक हो गए हैं कि पांचवी कक्षा के आधे से अधिक विद्यार्थी दूसरी कक्षा की हिंदी की पुस्तक तक नहीं पढ़ सकते हैं। प्रधानमंत्री मोदी, 2047 तक भारत को विकसित देश बनाने की बात करते हैं और इससे कोई असहमत नहीं हो सकता है। यह सर्व ज्ञात है कि विकसित देश की पहली पहचान यही होती देश के सभी परिवारों के बच्चों को आर्थिक कमी से कारण अथवा सामाजिक रूप से वंचित होने के कारण, अच्छी शिक्षा से वंचित न रखा जाए । उसके लिए जाति, वर्ग, भाषा के आधार पर कोई भेदभाव न हो, न ही आर्थिक विषमता अच्छी शिक्षा प्राप्त करने में बाधक हो। यह तभी संभव है जब अच्छी शिक्षा उपलब्ध कराने की जिम्मेदारी सरकार स्वयं ऊपर ले और अपनी जिम्मेदारी से मुक्त होकर निजी क्षेत्र को अपनी जिम्मेदारी हस्तांतरित ना करे। इस काम को यदि निजी क्षेत्र करेगा, तो वह उसको एक व्यवसाय के रूप में करेगा, जैसा कि वर्तमान में होता दिखाई दे रहा है। पाठ्य पुस्तकों एवं विभिन्न प्रकार की सुविधाओं के नाम पर हजारों-लाखों रुपए फीस के रूप में वसूले जा रहे हैं। कुछ वर्षों से सरकारी स्कूलों की संख्या में कमी आई है। सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों की संख्या में भी कमी आई है, और निजी क्षेत्र के विद्यालय में बच्चों की संख्या बढ़ी है। इसके कारण, गरीब परिवारों पर जहां आर्थिक भार बढ़ा है, वहीं खराब प्रकार की शिक्षा मिलने के कारण उनके लिए जीवन में आगे बढ़ने के अवसर भी संकुचित हुए हैं। विकसित देश की पहली आवश्यकता है कि सभी बच्चों को समान स्तर की शिक्षा के अवसर प्राप्त हों। या तभी संभव है जब प्रत्येक बच्चे को, चाहे वह गरीब हो या अमीर, शहर में रहता हो या गांव में, सब को एक समान गुणवत्तापूर्ण, सुविधा युक्त शिक्षा प्राप्त करने के लिए विद्यालय उपलब्ध हो ।

समान स्कूल व्यवस्था के बावजूद, यदि कोई अत्यधिक अमीर अभिभावक अपने बच्चों को निजी स्कूलों में पढ़ाना चाहे तो वे इसके लिए स्वतंत्र होंगे, किंतु इसके कारण बच्चों की पढ़ाई के स्तर में कोई अंतर नहीं आना चाहिए। अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड, यूरोप और स्कैंडिनेविया के देशों की शिक्षा व्यवस्था सर्वाधिक अच्छी मानी जाती है। वहां लगभग सभी बच्चे सरकारी स्कूलों में ही पढ़ते हैं।

विश्व के सभी विकसित देशों में लगभग 90 प्रतिशत बच्चे सरकारी स्कूलों में पढते हैं, जिनकी गुणवत्ता भारत के निजी स्कूल के विद्यालय की गुणवत्ता से कहीं बेहतर है। अच्छे सुविधा युक्त विद्यालय उपलब्ध कराने के लिए आवश्यक धनराशि उपलब्ध न होने का बहाना सरकार नहीं कर सकती। जो देश अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा उपलब्ध कराने पर पर्याप्त धनराशि का प्रावधान न करें उसे किसी भी रूप में विकसित देश होने की कल्पना छोड़ देनी चाहिए। जब सरकार नवोदय विद्यालय, केंद्रीय विद्यालय, सैनिक स्कूल आदि बहुत अच्छी गुणवत्ता के साथ चला सकती है, तो क्यों नहीं केंद्र और राज्य सरकारें मिलकर देश के सभी विद्यालय अच्छी सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा, बच्चों को उपलब्ध करा सकते हैं? इसके लिए जितनी धनराशि की आवश्यकता हो, सरकार को उपलब्ध करानी चाहिए। यह एक ऐसा क्षेत्र है, जिसमें हो सकता है, परिणाम पाँच वर्षों में न मिले, किंतु भविष्य की नींव अच्छी शिक्षा ही रखेगी। जिन भी देश ने तरक्की की है, उन्होंने प्रारंभिक शिक्षा पर सर्वाधिक ध्यान दिया है एवं उसके लिए वित्तीय प्रावधान भी रखा है। हमें शिक्षा को व्यवसायिकता के कुचक्र से बाहर निकाल कर इसे, देश की प्रगति का प्रमुख माध्यम मानते हुए, उसके लिए पर्याप्त वित्तीय संसाधन उपलब्ध कराने होंगे । शिक्षक प्रशिक्षण में भी आमूल चूल परिवर्तन करना होगा । पर्याप्त संख्या में शिक्षक सभी राजकीय विद्यालय में उपलब्ध कराने होंगे। इससे सरकारी विद्यालय में शिक्षा का स्तर बेहतर होगा। पाठकों को स्मरण करना चाहूंगा कि 2016 में इलाहाबाद उच्च न्यायालय द्वारा एक निर्णय लिया गया था जिसमें यह कहा गया था कि सभी राजकीय अधिकारियों, कर्मचारियों के बच्चों को निश्चित को निश्चित रूप से राजकीय विद्यालय में ही पढ़ने हेतु भेजना होगा। जो लोग ऐसा ना करें, उन्हें राजकीय सेवा से बाहर कर दिया जाए। वर्तमान में जो शिक्षक राजकीय विद्यालय में कार्यरत हैं एवं जिन शिक्षा अधिकारियों के एवं उच्च अधिकारियों के पास शिक्षा की जिम्मेदारी है, उनमें से लगभग सभी के बच्चे निजी विद्यालय में पढते हैं। परिणामस्वरूप, उनकी कोई रुचि इसमें नहीं है कि, सरकारी विद्यालय में पढ़ाई का स्तर किस प्रकार का है? जब स्वयं के बच्चे उसमें पढेंगे, तो निश्चित रूप से उनकी गुणवत्ता के स्तर में वृद्धि होगी। इस पूरी पद्धति को 'समान स्कूल व्यवस्था' का नाम दिया जा सकता है। इस के अन्तर्गत, देश के सभी बच्चों को एक ऐसे स्कूलों में पढने का अवसर मिले जहां समान स्तर की शिक्षा प्रदान की जाए। हमें पड़ोस के स्कूल की अवधारणा को भी पुनर्जीवित करना होगा। आजकल प्रारंभिक कक्षा में पढने वाले बच्चे 10-15 किलोमीटर दूर स्थित निजी विद्यालयों में पढने हेतु जाते हैं। होना तो यह चाहिए कि किसी भी प्रारंभिक कक्षा के बच्चों का बहुत अधिक समय केवल विद्यालय जाने और आने में ही व्यर्थ ना हो जाए।

समान स्कूल व्यवस्था के बावजूद, यदि कोई अत्यधिक अमीर अभिभावक अपने बच्चों को निजी स्कूलों में पढाना चाहे तो वे इसके लिए स्वतंत्र होंगे, किंतु इसके कारण बच्चों की पढाई के स्तर में कोई अंतर नहीं आना चाहिए। अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड, यूरोप और स्कैंडिनेविया के देशों की शिक्षा व्यवस्था सर्वाधिक अच्छी मानी जाती है। वहां लगभग सभी बच्चे सरकारी स्कूलों में ही पढते हैं। उच्च शिक्षा भी यदि किसी को ग्रहण करनी हो तो उसके लिए किसी को भी आर्थिक दृष्टि से कमजोर होने के कारण मना नहीं किया जाता। सरकार उसकी जिम्मेदारी लेती है कि वह बिना ब्याज का कर्ज बच्चों को उपलब्ध कराए। वह कमाई करने लायक होने के बाद सरकार को लौटा सकता है।

भारत में यह मान लिया गया कि अच्छी शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार केवल कुछ अभिजात्य वर्ग का ताकि कमजोर तबके के लोग उनको श्रमिक के रूप में काम करने हेतु निरंतर उपलब्ध होते रहें। कुछ लोगों की सोच है कि यदि कुछ जातियों, वर्गों और आदिवासियों के बच्चे भी अच्छी शिक्षा प्राप्त करने लग गए तो उनके लिए श्रम साध्य काम करने वाले मजदूर आदि कहां से उपलब्ध होंगे?

समान स्कूल व्यवस्था लाने के लिए सबको अपना पूरा जोर लगाना होगा ताकि देश के दो तिहाई बच्चों के लिए खराब स्तर की शिक्षा व्यवस्था न बनी रहे। इसके लिए यदि जीडीपी का जितना भी हिस्सा खर्च करना पड़े तो उसके लिए कोई बहाना नहीं करना होगा। सरकार को केवल सर्वोच्च वरीयता शिक्षा को देनी है, यह तय करना होगा ।

आगामी कुछ दिनों में लोकसभा के लिए चुनाव होने वाले हैं। सामाजिक संगठनों को आंदोलन चला कर विभिन्न दलों पर यह दबाव बनाना होगा कि वे यह घोषणा करें कि वे सत्ता में आने पर देश में 'समान स्कूल व्यवस्था' लागू करेंगे, ताकि अधिकांश बच्चे इन स्कूलों में पढ सकें और किसी को अपनी जाति, वर्ग, भाषा, धर्म या गरीबी के कारण अच्छी शिक्षा से वंचित न होना पड़े। ऐसा करने से जहां प्रत्येक बच्चे को अपनी क्षमता का पूर्ण विकास करने का अवसर मिलेगा वहीं हम उनके संविधान प्रदत्त अधिकारों की भी रक्षा कर पाएंगे। साथ ही, देश की प्रगति में भी और तेजी आ पाएगी, क्योंकि प्रतिभा की कोई कमी गरीब वर्ग में है। प्रकृति ने, गरीब, अमीर, सब में प्रतिभा का छिडकाव बराबर रूप से किया है। किसी को भी केवल उसके जन्म के आधार पर अच्छी शिक्षा से वंचित करना भारत के लिए स्वीकार्य नहीं होना चाहिए। जो दल प्रारंभिक शिक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता न दे उसे सत्ता में आने से रोकना होगा, तभी यह दबाव राजनीतिक क्षेत्र में पड़ेगा कि शिक्षा की बात सबसे पहले की जाए ।

हम कितने भी और प्रकार के, आधुनिकता के प्रतीकात्मक चिन्ह बना लें, किंतु उससे देश का भविष्य कभी उज्जवल नहीं होगा। आशा है, सभी दल अपने चुनाव घोषणा पत्र में 'समान स्कूल व्यवस्था' लागू करने हेतु घोषणा करेंगे । जो ऐसा करें, उसे जनता का पूरा समर्थन प्राप्त होगा, क्योंकि आज भी दो तिहाई बच्चे अच्छी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से वंचित है और यदि उन्हें यह अवसर मिलेगा, तो उन परिवारों का समर्थन भी इन दलों को मिलेगा।

यही कामना है कि सभी राजनैतिक दलों को यह सद्बुद्धि मिले कि वे देश में समान स्कूल व्यवस्था लागू करने को सर्वोच्च प्राथमिकता दें, ताकि भारत वास्तव में विकसित देशों की सूची में शामिल हो सके।

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

शीतला सप्तमी पर भीलवाड़ा शहर में "मुर्दे की सवारी" निकाली

- शीतला सप्तमी पर जमकर उड़ी गुलाल, मुर्दे की सवारी (ईलाजी की डोल) निकली
- इसमें जिंदा युवक की अर्थी सजाकर बाजार में घुमाया और युवक गुलाल उड़ाते चलते रहे

भीलवाड़ा शहर में परंपराओं के अनुसार मुर्दे की सवारी निकाली गई, इसका शहरवासियों ने आनंद लिया।

भीलवाड़ा, (निसं)। शीतला सप्तमी पर शहर में परंपराओं के अनुसार मुर्दे की सवारी निकाली गई। रंगोत्सव को देखते पुलिस ने पुख्ता बंदोबस्त किए। होली में खलल नहीं पड़े, इसके लिए पर्याप्त जाब्ता तैनात किया गया। 600 से ज़्यादा पुलिसकर्मी सुरक्षा व्यवस्था में लगाए गए। इसके अलावा आरएसी की तीन कम्पनी और ढाई सौ होमगार्ड भी सुरक्षा में पुलिस के साथ लगाये गये। साथ ही हुड़दंगियों से सख्ती के साथ निपटने के लिए वीडियो और ड्रोन कैमरे से भी नजर रखी गई। शहरवासियों ने जमकर त्योहार का आनंद लिया।

जानकारी के अनुसार मेवाड़ में होली का रंग पूरे 15 दिन चलता है। अलग-अलग जगहों पर अलग अलग दिन होली खेली जाती है। जहाजपुर कस्बे में पंचमी को रंग खेला जाता है। भीलवाड़ा, शाहपुरा, गुलाबपुरा व मांडलगढ़ व क्षेत्रों में शीतला सप्तमी व कहीं अष्टमी को रंग व गुलाल खेला जाता है। मांडल में तेरस को होली खेलते हैं। साथ ही बादशाह की सवारी निकालते हैं व नाहर नृत्य का आयोजन किया जाता है।

शहर में दोपहर दो बजे चित्तौड़ वाले की हवेली के पास से मुर्दे की सवारी (ईलाजी की डोल) निकली गई। इसमें जिंदा युवक की अर्थी सजाकर बाजार में घुमाया गया और युवक गुलाल उडाते हुए चलते रहे। कुछ युवक अर्थी पर लेटे युवक पर वार करते रहे। इसके चलते वह अर्थी से कूदकर भागने का प्रयास करता तो फिर से उसे सुला दिया जाता। रंग और गुलालों के बीच परम्परानुसार शहर भर में शीतला सप्तमी का पर्व धूमधाम से मनाया गया। एसपी राजन दुष्यंत ने बताया कि संवेदनशील और अतिसंवेदनशील इलाकों में खास नजर रही। सुबह आठ से शाम पांच बजे तक जाब्ता तैनात किया गया। थानों की चेतक और मोबाइल टीम भी लगातार गश्त करती रही। शहर में 75 प्रमुख चोराहे और मोहल्लों को चिहिन्त किया गया, जहां जाब्ता तैनात रहा। पुलिस अधिकारी लगातार अपने-अपने इलाके में गश्त करते रहें। शराब पीकर वाहन चलाने, हुड़दंग करने वाले, राहगीरों पर गुलाल फेंकने वालों से सख्ती से निपटा गया। किसी भी स्थिति से निपटने के लिए पुलिस नियंत्रण कक्ष में रिर्जव में भी जाब्ता तैनात किया गया था। इसके अलावा घुड़सवार भी कंट्रोल रूम के बाहर तैनात रहे। शहर में सुरक्षा बंदोबस्त में आसपास के थानों से भी प्रभारियों को जाप्ते के साथ बुलाया गया था।

ठंडे पकवानों का भोग लगाकर बास्योड़ा का पर्व मनाया

- मंगल गीतों के साथ महिलाओं ने शीतला माता की पूजा की, खुशहाली की कामना मांगी

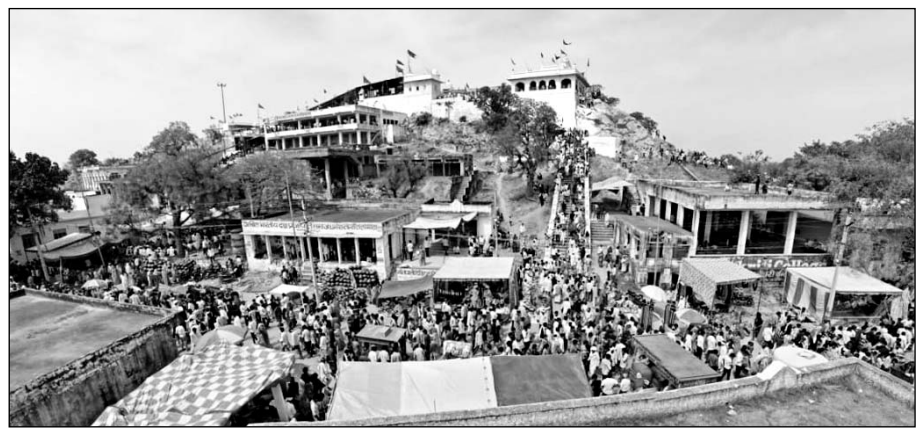

चाकसू में शीलकी डूंगरी स्थित शीतला माता के मंदिर पर मेला भरा।

चाकसू, (निसं)। शीतला अष्टमी के मौके पर सोमवार को शीलकी डूंगरी स्थित शीतला माता के मंदिर पर मेला भरा। जिसमें श्रद्धालुओं का सैलाब उमड़ पड़ा। श्रद्धालु लंबी कतार में लगकर शीतला माता की पूजा-अर्चना करने के लिए प्रतीक्षारत थे। महिलाओं, बालक-बलिकाओं, पुरुषों ने पूड़ी, पपड़ी, दही, राबड़ी, छाछ, पकौडे, पापड़, खीचे, चावल, पचकुटे की सब्जी और अन्य पकवानों का भोग लगाकर मुख्यघर-परिवार में खुशहाली की कामना की। हर तरफ रंग रंग बिरंगी पोशाक में श्रद्धालुओं की भारी भीड़ आकर्षण का केंद्र बनी हुई थी। श्रद्धालु जोश के साथ माता के नारे लगाते नजर आ रहे थे। धीरे-धीरे भीड़ का पारा चढ़ता गया और दोपहर के बाद इतनी भीड़ बढ़ गई कि जो जहां थे वहीं ठहर सा गया था।

वहीं कस्बे के छोटे-बड़े माता के मंदिरों समेत कुम्हार के घर पर श्रद्धालु महिलाएं पूजा अर्चना के लिए उमड़ी। महिलाओं ने शीतला माता की ठंडे पकवानों से पूजा की और परिवार तथा क्षेत्र की खुशहाली की कामना की। वहीं मेला स्थल पर मुख्य मंदिर परिसर में आकर्षक सजावट की गई। गौरतलब है कि कस्बे की शीलकी डूंगरी पर प्रति वर्ष चैत्र माह की शीतलाष्टमी पर मां शीतला का लक्खी मेला लगता है। इस अवसर पर प्रात:काल से श्रद्धालु शीतला मैया की जय जयकार करते मंदिर पहुंचते हैं तथा परिवार की खुशहाली, रोगों से विशेषकर चेचक से मुक्ति के लिए प्रार्थना करते हैं और ठण्डे पकवानों का भोग लगाकर ठण्डा भोजन गृहण करते हैं।

मेलें में इस बार मौत का कुआं, बडे झूले एवं सर्कस नहीं दिखाई दिए। इससे श्रद्धालुओं को इस बार छोटे झूले व जादूगर से मनोरंजन करना पडा। पुलिस थाने के सामने राजू लक्ष्मण सैनी के नेतृत्व में जन सहयोग से श्रद्धालुओं के लिये निशुल्क छाछ राबड़ी व चाय और रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। जिसमें गायक कलाकारों द्वारा एक से बढ़कर एक माता रानी की भजनों की प्रस्तुति से श्रद्धालु झूम उठे। मेला स्थल पर जाने वाले रास्तों पर जगह-जगह राजस्थानी कलाकारों की ओर से लोक नृत्यों व अलगोजा की धूम रही।

मेले में सुविधा के लिए नगरपालिका प्रशासन द्वारा साफ-सफाई, पानी, रोशनी व्यवस्था तथा पुलिस प्रशासन शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए अतिरिक्त पुलिस बल मुस्तैद रहा। मेले में किसी भी अप्रिय घटना से बचने के लिए एडिनशल डीसीपी दक्षिण पारस जैन के नेतृत्व चाकसू एसीपी सुरेंद्र सिंह सहित 4 एसीपी व चाकसू घाना प्रभारी कैलाश दान, कोटखावदा थाना प्रभारी अब्दुल वहीद, शिवदासपुरा थाना प्रभारी रणजीत सिंह सहित 6 एसएचओ 133 आरएसी के जवान 40 महिला पुलिसकर्मियों सहित 800 पुलिस के जवान चप्पे चप्पे पर मौजूद रहे। वहीं उपखंड अधिकारी शिवचरण शर्मा, तहसीदार संदीप चौधरी, अधिशाषी अधिकारी शम्भू मीना भी विशेष निगरानी रखे हुए थे।

92 साल की महिला ने नेशनल चैंपियनशिप में गोल्ड जीते

पाना देवी ने 100 मीटर दौड़, गोला फेंक, तश्तरी फेंक में मेडल जीते

बीकानेर। "एज इज जस्ट ए नंबर" या यूं कह लें कि "उम्र एक संख्या मात्र है" जैसे वाक्य अक्सर सुनने को मिलते हैं और कई बार इसके उदाहरण भी सामने आते हैं। उसी तरह का उदाहरण पेश किया है बीकानेर के नोखा के अणखीसर गांव की रहने वाली 92 साल की महिला पाना देवी गोदारा ने, जिन्होंने 92 वर्ष की उम्र में नेशनल चैंपियनशिप में भाग लेने की हिम्मत दिखाई और जब कांपिटिशन समाप्त हुआ तो उन्होंने सभी को हैरान करते हुए दौड़ सहित गोला फेंक, तश्तरी फेंक गोल्ड मेडल हासिल किया है और युवा सहित सैकड़ों महिलाओं के लिए मिसाल बनी है।

हाल ही में पुणे में 44वीं नेशनल मास्टर एथलेटिक्स चैंपियनशिप 2024 आयोजित की गई। जिसमें पाना देवी गोदारा ने भी भाग लिया। जिसमें उन्होंने तीन गोल्ड मेडल (100 मी दौड़, गोला फेंक, तश्तरी फेंक) जीते हैं। वह अब वर्ल्ड चैंपियनशिप खेलने के लिए अगस्त में स्वीडन जाएगी।

जानकारी के अनुसार पाना देवी गोदारा के पोते जय किशन गोदारा खुद एक नेशनल एथलीट हैं। वह बच्चों को विभिन्न खेलकूद गतिविधियों का अभ्यास करवाते हैं। उन्होंने बताया कि वे अपने साथ एक दिन दादी को स्टेडियम लेकर आए। जिसके बाद दादी मेरे साथ हमेशा स्टेडियम आने लगी। एक दिन दादी ने कहा कि वह भी खेलना चाहती है। फिर क्या, पोते ने उन्हें अभ्यास करना शुरू कर दिया। अब पोते को क्या पता था कि दादी प्रतियोगिता में भी भाग लेने लगेंगी। कई छोटे-बड़े चैंपियनशिप में भाग लेने के बाद हाल में उन्होंने पुणे में 44वीं नेशनल मास्टर एथलेटिक्स चैंपियनशिप 2024 में हिस्सा लिया। परिणाम के बाद सभी हैरान रह गए।

उन्होंने कहा कि उनके स्वास्थ्य और सफलता का मूल मंत्र अच्छा खान-पान और नशे से दूर रहना है। उन्होंने बताया कि 92 साल की उम्र में भी वह अपना काम खुद करती हैं और घर में एक जानवर की देखभाल भी करती हैं। उन्होंने युवाओं से प्रतिदिन 2 घंटे मैदान में बिताने को कहा। उन्होंने कभी फास्ट फूड, डिब्बाबंद खाना या ठंडा पानी नहीं खाया। सुबह जल्दी उठना और घर के काम में हाथ बंटाना उनकी दिनचर्या का हिस्सा है।

उन्होंने वर्षों से कोई दवा नहीं ली है और वह हर दिन अपने पोते के साथ व्यायाम करने के लिए मैदान पर जाती हैं। यही है उनकी सेहत का असली राज है। उनके पोते जय किशन गोदारा ने बताया कि दादी की उपलब्धि के बाद गांव की महिलाएं उनसे मिलने आने लगीं। गोदारा ने बताया कि गांव वालों को यह तो पता था कि पांच बेटों और तीन बेटियों की मां पाना देवी स्वस्थ हैं, लेकिन किसी ने यह नहीं सोचा था कि वह राष्ट्रीय टीम में खेलकर गांव का नाम रोशन करेगी।

राशिफल मंगलवार 2 अप्रेल, 2024

पंडित अनिल शर्मा

चैत्र मास, कृष्ण पक्ष, अष्टमी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2080, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र रात्रि 10:49 तक, परिद्य योग सांय 6:35 तक, बालव करण प्रात: 8:39 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 4:37 से मकर राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मीन, चन्द्रमा-धनु, मंगल-कुम्भ, बुध-मीन, गुरू-मेष, शुक्र-मीन, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज कालाष्टमी है। आज से वर्षीतप आरम्भ होगा और रिषभ देव जयन्ती है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 9:25 से 10:58 तक, लाभ-अमृत 10:58 से 2:03 तक, चर 3:36 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 6:20, सूर्यास्त 6:41

मेष
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्य के लिए यात्रा संभव है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

सिंह
व्यावसायिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। व्यावसायिक परेशानियां अभी यथावत बनी रहेगी। आर्थिक मामलों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। परिजनों के व्यवहार के कारण दु:ख हो सकता है।

धनु
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

वृष
मित्रों/रिश्तेदारों से आपसी अनबन हो सकती है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा।

कन्या
घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

मकर
अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। अनावश्यक धन खर्च होगा। मन में असंतोष बना रहेगा। परिवार में अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है।

मिथुन
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

तुला
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

कुंभ
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। व्यक्तिगत परेशानियां दूर होने लगेगी। दिनचर्या में सुधार होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है।

मीन
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।